International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 5 Issue 2, March-April, 2017, Impact Factor: 1.554

डार से बिछुड़ी : भटकती नारी की मर्मस्पर्शी कथा

डॉ. वीरेंद्र कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर, राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

उपन्यास : डार से बिछुड़ी

उपन्यासकार : कृष्णा सोबती

शोध का सार तत्त्व

उपन्यास में पाशो नामक किशोरी यौवन के मतवाले प्रारंभ में प्रेम का अंकुर पाकर रूढिग्रस्त मामू की सोच की शिकार हो जाती है। नानी के पास रहकर भी असुरक्षित जानकर अपनी मां के पास (शेखों के पास) आ जाती है। उपन्यास का केंद्रीय वाक्य 'नानी ठीक ही कहती थी ' "..... संभल कर री एक बार का थिरका पांव जिंदगानी धूल में मिला देगा ' वास्तव में आद्यंत उपन्यास की मूल धुरी है। न जाने किन -किन परिस्थितियों के घात - संघातों को सहती हुई, वह एक घर से दूसरे घर औरफिर तीसरे घर भटकने वाली पाशो नारी की अत्यंत करुण कहानी बन कर सामने आती है। परिस्थितियों से जुड़ते हुए, नाना झंझावातों की चोट सहती हुई अंत में जब अपनी डार पर बैठ पाती है तब तक उसका सुख- सुहाग, मान, जीवन रस निचुड़ चुका होता है।

कृष्णा सोबती के उपन्यास 'डार से बिछुड़ी '1958 में आया और नारी की मर्मस्पर्शी कथा लिए अत्यंत चर्चित हुआ। पाशो एक सुंदर नारीहै जिसकी मां अपने परिवार के विरुद्ध शेखों के घर पटरानी बन जाती है। पाशो की उत्सुकता होती है "खोजों के घर पटरानी बन कर बैठ जाने वाली नानी की बेटी कैसी लगती होगी? बार-बार सोचती और सोच- सोच कर और भी इठलाती। चाहती, किसी दिन चुपके से खोजों की हवेली जाऊं और किसी झरोखे से अपनी मां कहलाने वाली की एक झलक तोपाऊं। पर अपने छोटे- बड़े मामू के कठोर चेहरे याद कर पाँव ठिठक जाते।"1

पाशो खूबसूरत होती है, इसीलिए कभी नानी के साथ ठाकुर द्वारे जाती है तो नानी पाशो को कहती है "रब्ब तुझे संभाले ,अरी कपड़ा नीचे रखा कर। "

और नानी पाशो को चेतावनी भी देती थी

"अरी कुएँ में डूब मरी थी तेरा बीज डालने वाली !

अब तू संभलकर साँस भर। "2

नानी को दुःख था कि उसकी बेटी पाशोकी माँ शेखों के घर बैठ गई। इसी कारण नानी के दोनों लड़के पाशो के मामू उस पर कठोर अनुशासन रखतें हैं ।

नानी कहती हैं '-- "इस मुँह उसका नाम न लूँ बिटिया ,उसी की करनी तुझे भरनी थी तेरे दोनों मामे उसे कितना मानते थे यह लोक जहान जानता हैं ,पर वह नास होनी तो घर -भर का मुँह काला करा गई। "3
पाशो पूछ बैठती है -

"नानी खोजों की हवेली.....।"
इस पर नानी कहती है - "उस ओर नजर भी की तो लड़के जीता न छोड़ेंगे।4 "

नानी के घर मामू और मामियों से निरंतर कठोर अनुशासन और यातनाएं पाकर पाशो को मां की याद आती है। मामू को लगता है पाशो करीम से मिलने गई थी क्योंकि करीम सबको कहता है- "तेरा दिया चमकी का रुमाल- सर्राफे भर में दिखाता फिरता है। मौत आए तुझे, कहताहै मां शेखों के घर जा बैठी, अब लड़की इस दिल में रहेगी।5 "

पाशो अपनी मामी को इस पर प्रतिक्रिया प्रकट करती है- "झूठ है मामी, यह झूठ है। और मामी हाथ मटका बोली- 'अरे कालिखपुती, तेरी मां भी यही कहती थी।"6

उसका दोष मात्र इतना था कि वह उसे देख कर मुस्कुरा जाती थी - "शाह आलमी से आते- जाते तनिक एक नजर देख मुस्कुरा ही तो देती थी।"7

नानी को लगता है कि उसके लड़के पाशो का कहीं मार ना दें इसलिए वह मामू को समझाती हुई कहती है-- "बेटा समझा बहू को, अभागी को इस बार तो बक्स दो।"8

पाशो को खत्म करने का विचार उसके मामू करने लगते हैं

"पाशो को लगा कि जो जोड़- मेले के बहाने मेरी मौत आई है।"9 और पाशो रात अंधेरे में खोजों की हवेली की और अपनी मां के पास चल पड़ी।
शेखों के घर पहुंच कर रोते -रोते पाशो कहती है-- "मुझे मार डालेंगे... मुझे मार डालेंगे...।"10

ऊंचे- लंबे शेख ने पाशो को सुरक्षा का वचन दिया।
"घबरा न बेटी, जो होना था हुआ। जिसके आश्रय आई हो वही कोई राह भी सुझाएगा।"11
और शेख जी ने पाशो की मां को आवाज लगाई।
"मेहर ! तुम्हारी छोटी मेहर को लिवा लाया हूं।"
'कौन शेख जी? इतनी रात गए?
... और रोते- रोते मुझे अपनी और खींच लिया।"12

डरी हुई पाशो सुबह उठते ही पूछने लगी मां जिन्दा से- "मामू तो नहीं आए?"13

लेकिन पाशो की मां अपने भाइयों की बुराई नहीं करती थी और वह इस बात के लिए स्वयं को दोषी मानती थी-- "बिटिया तेरा दोष नहीं, मैं ही इस सब की भागीदार हूं। मेरे वीर तो सच्चे हैं। मुझ सी अभागी बहन जिनकी लिशकती पगड़ियों का खरा पानी उतार फेंकें , उसकी जाया उन्हें कैसे सुहाएगी?"14

पाशो के मामू उसे शेख के यहां खोजने आते हैं तो शेख उन्हें दीवान के यहां भेज देते हैं। बाबा दित्ते ने उसे समझाया -- "बच्ची किसी ने पूछ लिया तो यही कहना, सासरे जाती हूं।"15

दिवान जी के पास उसका नाम मालूम पड़ता है। दिवान जी के पास उस पाशो को जो वर्तमान में मालन है, किंचित सुख अवश्य मिलता है यही उसे एक पुत्र की प्राप्ति भी हो जाती है, किंतु प्रारब्ध फिर नरक बन कर लौट आता है ,दिवान की मृत्यु हो जाती है और दूसरे दिवान जी उसे बेच देते हैं -- "इस सुहाग जली के संग तो अब कोई न था, बस तन- मन में रमी अपने धनी की मीठी याद थी अपने राजे का बिछोड़ा था। "16

बरकत दिवान की नीयत ठीक नहीं थी। कुछ मोहरे लेकर उसने मालन को बेच दिया-- "आंख खुली। पिछला पहर होगा।... एकाएक समझ नहीं पाई---- कहां हो ,मैं कहां हूं... हाथ फैलाया... मुन्ना कहां है?"17

पाशो के मन ने कहा - "बरकत दिवान, तूने खत्री होकर घर की बहू भेज दी। जो मैं जानती, तू इस दाँव में है, तो गहना गट्टा तुम्हारे हवाले न कर देती।"18

वह अपने पुत्र को पाना चाहती है और लाला से प्रार्थना करती है--"आप मेरे पूजन जोग , मेरे पिता समान, रब्ब के वास्ते मुझे मेरे लाल के पास लौटा दे। यहीं रही तो मैं मर जाऊंगी, मैं जीती न बचूंगी ।"19

तो इस पर लाला कहते हैं-- "बीबी, बरकते को घड़ा भर मोहरे दी हैं तू अब इस घर की दात है।"20

लाला के यहां मंझला बेटा उसे दिवान को याद न करने के लिए और पुत्र मोह छोड़ देने के लिए उसको कहता है -- "उसका नाम न लेना। तुम्हारी झोली हमारा लाल खेलेगा।"21

उसके बाद नगर में खलबली मच जाती है। फिरंगी गौरों की सेना मारकाट मचाने लगती है जिसमें मंझला भी मारा जाता है और पाशो फिर मालन बनी यह नारी विधवा हो जाती है। वह याद करती है-- "सपने हो गए वह मीठे दिन। शेख जी, वीर, मां और लाड़ला लाल... मेरा।"22

उपन्यासकार लिखती हैं -- "दिन भर गोले फटते रहे। शाह जहांगीर के मैदान से रह- रहकर धमाके होते... रह रहे धुंए उठते।"23

और इस लड़ाई के अंधियारे में भटकी वह ऐसी जगह पहुंच जाती है जहां भटके हुए अपने मिल जाते हैं -- "मैं कहां हूं... मैं कहां हूं... जिगरा करो बच्ची अब तुम घर आन पहुंची । मौसी से कहें वीर तुम्हारी खोज में न जाने कहां- कहां भटका किया। कल रात फिरंगी की कचहरी में तुम्हें पहचान... बीच में ही मां मेरा माथा चूम शेख जी से बोली -- "शेख जी मां जिंदा से कहें दिवानों के लाड़ले को लाए। बेटी के वीर को बुलाएं, आज उन्हीं के पैरों का सदका, बिछड़ी बिटिया हमारी डार में आन मिली।"24

इस प्रकार कृष्णा सोबती ने 'पाशो' फिर 'मालन 'बनी और फिर मंझले की पत्नी बनी, नारी की बड़ी कारुणिक कहानी

' डार से बिछुड़ी' उपन्यास में चित्रित की है जो अनेक संदेश लेकर नारी विमर्श में अपनी जगह बनाए हुए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची --

डार से बिछुड़ी - कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 1958,

1. डार से बिछुड़ी - कृष्णा सोबती पृ. 8
2. ----------वही ---------- 9
3. ----------वही ---------- 11
4. ----------वही ---------- 11
5. ----------वही ----------14
6. ----------वही ---------- 15
7. ----------वही ----------16
8. ----------वही ---------- 19
9. ----------वही ----------19
10. ----------वही ----------21
11. ----------वही ----------22
12. ----------वही ----------23
13. ----------वही ----------24
14. ----------वही ----------25
15. ----------वही ----------33
16. ----------वही ----------57
17. ----------वही ----------70
18. ----------वही ----------71
19. ----------वही ----------72
20. ----------वही ----------72
21. ----------वही ----------85
22. ----------वही ----------93
23. ----------वही ----------98
24. ----------वही ----------101